कक्षा XI - XII

मैथिली व्याकरण, रचना ओ साहित्य–रूप

मैथिली व्याकरण,

रचना औ साहित्य-रूप

(एगारहम ओ बारहम कक्षाक मैथिली भाषाक पुस्तक)

(एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त ।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड

प्रथम संस्करण : 2012-13

मूल्य : रु० 43.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा **अग्रवाल इन्टरप्राईजेज**, मीठापुर, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोभ (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर **5,000** प्रतियाँ 24X18 से.मी. साईज में मुद्रित ।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकारक निर्णयानुसार जुलाई 2007 सँ राज्यक उच्च माध्यमिक कक्षा (कक्षा : XI-XII) हेतु नव पाठ्यक्रमकेँ लागू कयल गेल अछि। भाषा समूहक पोथी सभक नव पाठ्यक्रमक आलोकमे एस.सी.ई.आर.टी. पटना द्वारा विकसित तथा बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण डिजाइनिंग कऽ मुद्रित कयल गेल अछि, कें बिहार राज्यक पाठ्य-पुस्तकक रूप मे स्वीकार कयल गेल अछि। ई पोथी ओही अनुक्रमणिकाक एक शृंखला थिक।

बिहार राज्यमे विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा : I-XII)क गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरणक निमित्त कृत संकल्पित एवं शिक्षाक समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी० के० शाही तथा शिक्षा विभागक प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंहक मार्ग निर्देशनक प्रति हम कृतज्ञ छी।

हमरा आशा अछि जे ई पोथी सभ राज्यक वर्तमान एवं भावी पीढ़ीक लेल ज्ञानोपयोगी सिद्ध होयत। एस.सी.ई.आर.टी.क निदेशकक हम आभारी छी, जनिक नेतृत्वमे एहि पुस्तककेँ विकसित कयल गेल।

हमरा आशा नहि पूर्ण विश्वास अछि जे प्रस्तुत पोथी, ज्ञानवर्धक, ज्ञानोपयोगी एवं उपलब्धि स्तरक वृद्धिमे सहायक सिद्ध होयत। यद्यपि संवर्द्धन एवं परिष्करणक सम्भावना सदैव भविष्यक कोरामे सुरक्षित रहैत अछि, तथापि प्रकाशन एवं मुद्रणमे निरन्तर अभिवृद्धि करबाक प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्र, अभिभावक, शिक्षक, शिक्षाविद लोकनिक टिप्पणी एवं सुझावक सदैव स्वागत करत जाहिसँ बिहार राज्यकेँ देशक शिक्षा जगतमे उच्चतम स्थान देअयबामे हमर प्रयास सहायक सिद्ध भऽ सकय।

जे० के० पी० सिंह, भा०रे०का०से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा बोध

श्री हसन वारिस, निदेशक, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार ।
श्री रघुवंश कुमार, निदेशक (शैक्षणिक), बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग), पटना ।
श्री सैयद अब्दुल मोईन, विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार ।

मैथिली पाठ्यपुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष, मैथिली भाषा समूह

डॉ० इन्द्रकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना ।

समन्वयक, मैथिली भाषा समूह

डॉ० अनिल कुमार मिश्र, व्याख्याता, राजकीय बालक उच्च विद्यालय, लालबहादुर शास्त्रीनगर, पटना ।

सदस्य, मैथिली भाषा समूह

डॉ० रमण झा, विश्वविद्यालय प्राचार्य, ल० ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा ।
डॉ० नरेश मोहन झा, प्राध्यापक, आर. के. कॉलेज, मधुबनी ।
डॉ० कमलाकान्त भंडारी, व्याख्याता, राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, शास्त्रीनगर, पटना ।

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक) की समीक्षा समिति के सदस्य

प्रो० देवेन्द्र झा, पूर्व अध्यक्ष, मैथिली विभाग, बी० आर० अम्बेदकर विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर ।
प्रो० देवकान्त झा, पूर्व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, वीर कुँअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा ।

अकादमिक सहयोग

डॉ० कासिम खुर्शीद, विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा, एस.सी.ई.आर.टी. ।
डॉ० लक्ष्मीकान्त चौधरी 'सजल', व्याख्याता, पटना हाई स्कूल, गर्दनीबाग, पटना ।
डॉ० अर्चना, व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी. ।
डॉ० सुभाष चन्द्र झा, प्राध्यापक, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, दरभंगा ।

अकादमिक संयोजन, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक विकास समिति

श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य शैक्षिक प्रबंधन एवं प्रशिक्षण संस्थान, पटना ।

आमुख

प्रस्तुत पोथी राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2006 क आलोकमे विकसित नवीन पाठ्यक्रम (2007)क आधार पर बनाओल गेल अछि । एहि पुस्तकक विकासमे एहि बातक ध्यान राखल गेल अछि जे शिक्षाक अर्थ बिहारक विद्यालयीय शिक्षार्थीकेँ एतबा सक्षम बना देब अछि जे ओ अपन जीवनक सम्यक् ओ यथार्थ अर्थ बुझि सकय, अपन समस्त योग्यताक समुचित विकास कऽ सकय, अपन जीवनक अभीष्ट निर्धारित कऽ सकय तथा ओकरा प्राप्त करबाक लेल यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कऽ सकय, आओर संगहि संग एहि बातकेँ सेहो बुझि सकय जे समाजक दोसरा व्यक्तिकेँ सेहो एहने करबाक पूर्ण अधिकार प्राप्त छैक । राष्ट्रीय पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2005 एवं बिहार पाठ्यचर्याक रूपरेखा, 2006 द्वारा निर्दिष्ट दृष्टिकोण हमरा एहि दिस उन्मुख करैत अछि जे शिक्षार्थीक विद्यालयीय परिधिक क्रियाकलाप एवं विद्यालयसँ बाहरक जीवनमे अंतराल नहि होयबाक चाही। पोथी ओ पोथीक बाहरक जग आपसमे शृंखलाबद्ध होयबाक चाही । आशा अछि जे ई प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) मे वर्णित शिक्षार्थी केन्द्रित व्यवस्थाक दिशामे बहुत दूर धरि लऽ जायत ।

एहि पोथीमे किशोर वयक कल्पनाशक्तिक विकास, हुनक गतिविधिक सृजनशीलता, हुनक प्रश्न करबा एवं ओकर उत्तर प्राप्त करबाक मौलिक अधिकारक समुचित संरक्षण तथा ओकरा रचनात्मक दिशा देबाक प्रयास कयल गेल अछि । निश्चये एहिमे शिक्षार्थीक संग-संग शिक्षक लोकनिक सेहो गंभीर अंतरंगताक संगहि ओतबे भूमिका होयबाक चाही । शिक्षार्थीक प्रति संवेदना एवं सहानुभूतिक संग हुनका पोथीमे सक्रिय सहभागिता राखय पड़तनि तथा लेखक परिचय, मूल पाठ आओर ओकरा संग संलग्न अभ्यास प्रश्नक सन्दर्भमे समुचित जागरूकता देखाबय पड़तनि । प्रत्येक पाठक संग अनेक तरहक अभ्यास अछि जाहिसँ शिक्षार्थीक अधिकार पाठ पर तँ बनबे करत, संगहि ओकर अभ्यन्तर व्यापक जिज्ञासाकेँ प्रोत्साहन भेटत । पुस्तकक परिकल्पनामे अनेक महत्त्वपूर्ण बात सभकेँ ध्यान राखल गेल अछि । भाषा ओ साहित्यक परिधिमे बान्हल घेराकेँ सकारात्मक स्तर पर विशृंखल करबा तथा बृहत्तर अनुभव क्षेत्र सभकेँ ओहिसँ जोड़बाक संग-संग वैविध्यपूर्ण पाठ शृंखलाकेँ उबाऊ होयबासँ बचबैत एहन प्रयत्न कयल गेल गेल अछि जे पाठ बोझिल नहि होअय तथा सामयिक जीवन संदर्भसँ सम्पृक्त भऽ छात्रक लेल रोचक बनि जाय । छात्र उत्सुकता एवं आनंदक संग तनावमुक्त रीतिसँ ओकरा पढ़ैत बहुविध जानकारी प्राप्त करय तथा ओहि जानकारीक ज्ञानक सृजनमे उपयोग कऽ सकय ।

एस. सी. ई आर. टी. सर्वप्रथम मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकारक माननीय मंत्री श्री हरिनारायण सिंह एवं प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंहक प्रति विशेष आभार प्रकट

करैत अछि जनिका नियमित मार्गदर्शनक बिना बिहारक नवीन पाठ्यक्रम (2007) एवं एहि पाठ्यपुस्तकक रचना संभव नहि होइत । एहि पुस्तकमे सम्मिलित रचनाकार, हुनक प्रकाशक एवं समस्त परिवारक प्रति आभार प्रकट करैत एहि पुस्तकक विकासकेँ लेल बनाओल पाठ्यपुस्तक विकास समितिक प्रति सेहो एस.सी.ई.आर.टी. कृतज्ञता व्यक्त करैत अछि । मैथिली भाषा समूहक अध्यक्ष डॉ० इन्द्रकान्त झा, समन्वयक, डॉ० अनिल कुमार मिश्र, सदस्य डॉ० रमण झा, डॉ० नरेश मोहन झा, ओ डॉ० कमला कांत भंडारीक प्रति हम विशेष आभार प्रकट करैत छी । ई लोकनि गंभीर सूझ-बूझ, अथक परिश्रम एवं भावात्मक लगावक संग एहि कार्यकेँ ससमय सम्पन्न कयल । पाठ्य पुस्तक विकास समितिक अकादमिक संयोजक श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठीक प्रति सेहो हम कृतज्ञता व्यक्त करैत छी ।

पुस्तक अपनेक हाथमे अछि । एकर अध्ययन-अध्यापनक प्रसंगमे भेल अनुभवसँ उत्पन्न परामर्श एवं सुझावक हमरा सदैव प्रतीक्षा रहत ।

(हसन वारिस)
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्
बिहार, पटना ।

प्रस्तुत पोथी : एक सिंहावलोकन

कक्षा एगारहम ओ बारहमक लेल मैथिली पाठ्यपुस्तक-विकासक शृंखलाक तेसर पुष्प थिक ई पोथी । मैथिलीमे एहन पोथीक नितान्त आवश्यकता छलैक जाहिमे एकहि संग व्याकरण ओ साहित्य विषयक गूढ़ संकल्पनाक समाहार हो । सरकार द्वारा अनुमोदित सरणी पर कार्यारम्भ कयल तँ एकटा यक्ष-प्रश्न एहि विषयक पाठ्यक्रम निर्धारणक आयल । एहि प्रसंग अंकनीय जे अपन अन्य समकक्षीय भाषाक संग चलबाक विवशता हमरा लोकनिकेँ छल । तदनुरूप पाठ्यक्रम-निर्धारण ओ पाठ्यपुस्तक विकसित कयल गेल । गंभीर आयासक उपरान्त एकर पाठ्यसामग्रीकेँ मूर्त रूप देल गेल अछि– यथासंभव सरल ओ संतुलित रखबाक प्रयासक संग ।

संस्कृतमे व्याकरण-लेखनक प्रति मिथिलाञ्चलीय मर्मज्ञ लोकनिक आसक्तिक अछैतो मैथिलीमे व्याकरण ओ साहित्य विषयक मीमांसा बड़ पुरान नहि अछि । ओना तँ आधुनिक कालक आरम्भिके चरणमे जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन, म. म. मुकुन्द झा 'बक्शी' तथा म. म. मुरलीधर झा द्वारा मैथिली व्याकरण विषयक पोथी लिखल गेल मुदा सुसम्बद्ध विवरणक दृष्टिएँ मैथिलीक पाणिनिक रूपमे लब्धप्रतिष्ठ महावैयाकण पं. दीनबन्धु झा विरचित 'मिथिलाभाषा-विद्योतन' एवं 'धातुपाठ' (मिथिलाभाषा-विद्योतनक दोसर खण्ड) एक मानक कृति मानल जाइछ । हिनक अलंकार विषयक एक गोट आओर पोथी 'अलंकार सागर' एहि क्रमक एक गंभीर प्रयास कहल जायत ।

अलंकार विषयक पं. सीताराम झा द्वारा सृजित 'अलंकार दर्पण'क अवदानकेँ सेहो विस्मृत नहि कयल जा सकैछ । कविवरक ई प्रयास सकारात्मक छल तथा सरल ओ प्रवाहमय शैलीमे लक्षण एवं विलक्षण दृष्टान्त द्वारा अलंकार विषयक गूढ़ताकेँ सहज बनयबाक आयास कयलनि । एहि क्रममे पं. रामचन्द्र मिश्र 'चन्द्र' कृत 'चन्द्राभरण' अलंकार विषयक एक उत्कृष्ट ग्रंथ थिक । प्रो. रमानाथ झा तँ सहजहिँ अपन प्रौढ़ दृष्टिकोण द्वारा मैथिलीक चतुर्दिक् विकासक लेल आकंठ निमग्न रहलाह । हिनक 'मिथिलाभाषा-प्रकाश' एवं 'अलंकार शिक्षा' आलोच्य क्रमक एक महत्त्वपूर्ण सोपान कहल जायत ।

परवर्ती वैयाकरणमे पं. गोविन्द झाक व्याकरण विषयक पोथी 'लघु विद्योतन', 'उच्चतर

मैथिली व्याकरण', 'मैथिली परिचायिका' आदि तथा छन्द विषयक 'संक्षिप्त छन्दःशास्त्र' मैथिली साहित्यकेँ संपन्न कयलक अछि। एकर अतिरिक्त अन्य उल्लेख्य कृतिमे प्रो. आनन्द मिश्रक 'सुबोध व्याकरण', पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क 'मुहावरा ओ लोकोक्ति', डॉ. जयधारी सिंहक 'काव्य मीमांसा', डॉ. किशोर नाथ झाक 'रस परिचय', बालगोविन्द झा 'व्यथित' क 'मैथिली भाषा आओर साहित्य', डॉ० धीरेन्द्रक 'काव्यशास्त्रक रूपरेखा', युगेश्वर झाक 'मैथिली व्याकरण आओर रचना', डॉ. दिनेश कुमार झाक 'मैथिली काव्यशास्त्र', डॉ. रमण झाक 'अलंकार-भास्कर' सदृश कतेको छात्रोपयोगी एवं साहित्योपयोगी कृति प्रकाशमे आयल। एहि प्रकारेँ आधुनिक कालमे आलोच्य-दिशामे निरंतरता एवं समसामयिक सन्दर्भमे प्रासंगिकताक अछैतो प्रस्तुत कक्षाक छात्र लोकनिक अध्ययन हेतु निर्धारित पाठ्यक्रमक अनुरूप अपेक्षित समस्त विषयवस्तुक समन्वय प्रायः कोनहु एकटा पोथीमे नहि भेटत संगहि उल्लिखित पोथी सभमे अधिकांशक अनुपलब्धता शिक्षार्थी ओ अध्यापककेँ अखरैत रहलनि अछि।

प्रस्तुत पोथी तीन खंडमे विभक्त अछि- जे क्रमशः 'व्याकरण-खंड', 'रचना-खंड' ओ 'साहित्यरूप-खंड', थिक। पहिल खंडमे व्याकरण विषयक एक परम्परित सैद्धान्तिक परिकल्पना भेटत मुदा मौलिकताक संग। वस्तुतः व्याकरण ओहन विद्या थिक जकरा द्वारा भाषाक शब्दक शुद्ध रूप, वाक्यमे ओकर प्रयोग आदिक नियमक निरूपण होइत अछि। कोनहु भाषाक व्याकरण एहन नियामक शास्त्र थिक जे ओकर स्वच्छन्दता पर तँ अंकुश लगबितहिँ अछि ओकरा किछु अंश तक नियंत्रित सेहो करैत अछि। भनहि व्याकरण भाषाक अनुगामी होअय मुदा ई सत्य जे व्याकरण भाषाकेँ एक सुनिश्चित मर्यादा सेहो प्रदान करैछ। एहि खंडक अंतर्गत विवेचित मैथिलीक वर्तनीगत तथ्य भाषा-विकास ओ ओकर मानकीकरणक दिशामे अवश्ये उपयोगी सिद्ध होयत।

'रचना-खंड'क अन्तर्गत शब्द-रूप (विपरीतार्थक, पर्यायवाची ओ श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द), मुहावरा, कहबी (लोकोक्ति), संक्षेपण, पत्र-लेखन, रस, शब्द-शक्ति, छात्रोपयोगी अलंकार तथा छंदक विशद विवेचना कयल गेल अछि। साहित्य शास्त्र विषयक अवधारणा तँ सदैव एक गूढ़ विषय रहल अछि तथापि 'साहित्यरूप-खंड' मे विभिन्न साहित्यिक विधाक सन्दर्भमे एक आधारभूत तथ्य भेटत। एहि खंडमे बेसी मौलिक प्रयोग करबाक प्रयास नहि कयल गेल अछि परञ्च परम्परित मुदा स्थापित मान्यताकेँ सुनिश्चित परिधिमे प्रमुखता देल गेल अछि। कतेको बिन्दु पर विद्वद्वर्गमे मतैक्य नहि भेटैछ जेना किछु मान्यता

रेखाचित्र ओ शब्दचित्रकेँ दू भिन्न साहित्य रूप मानैत छथि। एहि प्रसंग हमरा लोकनि मूल रूपेँ डा० धीरेन्द्र वर्मा एवं विद्वन्मंडली द्वारा संपादित 'हिन्दी साहित्य कोश'केँ आधार-स्रोतक रूपमे स्वीकार कऽ तथ्यक संयोजन ओ पर्यालोचन कयल अछि। मुदा जतय कतहुँ मौलिक उद्भावनाक अवसर वांछनीय बुझना गेल ततय प्रासंगिक अभिव्यक्तिकेँ प्रश्रय देबामे कोनो कोताही नहि कयल गेल अछि।

संभव अछि एतबा सार्थक प्रयत्नक अछैतो एहि पोथीमे मनीषी लोकनिक अपेक्षाक अनुरूप गुणवत्ता नहि आबि सकल हो। तकर एकटा प्रमुख कारण व्याकरण ओ साहित्यशास्त्र विषयक परम्परानुमोदित ओ स्थापित एक सुनिश्चित दृष्टिकोण सेहो थिक।

तथापि जँ ई छात्र ओ शिक्षक लोकनिक व्याकरण ओ साहित्योपयोगी विषयक ज्ञानक परिमार्जन कऽ सकत तँ हमरालोकनि अपन परिश्रम सार्थक बुझब।

सुधी समाजक अनुमोदन ओ मार्गदर्शनक प्राप्त्याशामे एखन एतबे कहि सकैत छी जे-

गच्छत: स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादत: ।
हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जना: ॥

अर्थात्,

चलनिहार संयोगवश पथपर पिछड़ि खसैछ ।
सुजन सम्हारथि हाथ धए दुर्जन देखि हँसैछ ॥

डॉ० इन्द्रकान्त झा
अध्यक्ष

डॉ० अनिल कुमार मिश्र
समन्वयक

विषयानुक्रम

	व्याकरण-खंड :	पृष्ठ सं०
1.	**भाषा ओ व्याकरण ।**	3-4
2.	**वर्ण-विचार**–वर्ण, वर्णमाला, वर्ण-भेद, उच्चारण-स्थान, अल्पप्राण-महाप्राण, घोष-अघोष, अनुतान, बलाघात, मैथिलीक वर्तनी ।	5-17
3.	**शब्द-विचार**–शब्द-भेद : रूपान्तरक आधार पर, उद्गमक आधार पर, व्युत्पत्तिक आधार पर, वाक्यमे प्रयोगक आधार पर :	
	(क) **संज्ञा**–परिभाषा, भेद, संज्ञाक रूपान्तर ओ कारक ।	18-25
	(ख) **सर्वनाम**–परिभाषा, भेद, सर्वनामक रूपावली ।	26-29
	(ग) **विशेषण**–परिभाषा, भेद, विशेषणक अवस्था ।	30-32
	(घ) **क्रिया**––परिभाषा, भेद, कालः परिभाषा, भेद, वाच्यः, परिभाषा, भेद ।	33-40
	(ङ) **अव्यय**–परिभाषा, भेद-क्रिया विशेषण, समुच्चय बोधक, विस्मयादि बोधक, सम्बन्ध बोधक ।	41-42
4.	**वाक्य-विचार**–परिभाषा, भेद : बनावटक विचारसँ, अर्थक विचारसँ, वाक्यान्तरण, वाक्य-रचना ।	43-55
5.	**शब्द-रचना**-(क) उपसर्ग ओ प्रत्यय (ख) संधि-परिभाषा, भेद (ग) समास-परिभाषा, भेद ।	56-76
	रचना-खंड :	
6.	**शब्द-रूप**–विपरीतार्थक शब्द, श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द तथा पर्यायवाची शब्द ।	79-103
7.	**संक्षेपण, पत्र लेखन ।**	104-121
8.	**मुहावरा ओ लोकोक्ति ।**	122-134
9.	(क) **शब्द शक्ति**-परिभाषा, भेद ।	135-141
	(ख) **रस**-परिभाषा, भेद ।	142-147
	(ग) **अलंकार**-परिभाषा, भेद ।	148-161
	(घ) **छंद**-परिभाषा, भेद ।	162-179
	साहित्यरूप-खंड :	
10.	(क) नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, कथा-लघुकथा, उपन्यास, निबंध, आलोचना, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, महाकाव्य, खंडकाव्य ओ मुक्तक ।	183-200
	(ख) **पारिभाषिक शब्दावली**-बिम्ब, प्रतीक, कल्पना ओ यथार्थ ।	200-204